नारी संजीवनी

विश्व में वर्तमान में वातावरण में हो रहे परिवर्तनों के कारण ही कम आयु की युवतियों तथा महिलाओं को बांझपन, रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, मासिक धर्म की अनियमितता, एडस, रसौली, स्तन, गर्भाशय, गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर, खून की कमी जैसी बहुत सारी गंभीर बीमारियों का सामना करना पड़ रहा हैं.

बांझपन

विश्व में महिलाओं में बांझपन की समस्या गंभीर रुप से बढ़ रही है. वर्तमान में 1 करोड़ से अधिक युवतियां बांझपन के कारण परेशान हैं. बांझपन को दूर करने के लिए वर्तमान में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मंहगी एवं बहुत ही जटिल उपचार प्रस्तुत कर रही है.

महाभारत के समय में विराट के दरबार में सहदेव ने कहा था कि मैं ऐसे उत्तम लक्षणों के सांढों के बारे में जानता हूं जिनका मूत्र सूघ लेने मात्र से बांझ महिला गर्भ धारण कर लेती है.

लगातार अनुसंधान के बाद वर्तमान में विश्व में यह स्प-ट है कि नारी संजीवनी के नियमित सेवन करने पर बांझपन दूर करता है.

महिलाओं का टानिक

नारी संजीवनी महिलाओं का टानिक है. नारी संजीवनी लगातार पीने के कारण मुरझाया हुआ चेहरा गुलाब के समान खिलने लगता है. प्राकृतिक सौंदर्य उभरने लगता है.

रक्तप्रदर

विश्व में वर्तमान में रक्तप्रदर की बीमारी बहुत तेजी के साथ में महिलाओं में बढ़ रही है. रक्तप्रदर के कारण महिलाओं में मानसिक परेशानियां चरम सीमा तक पहुंच जाती है. नारी संजीवनी में गोमूत्र की महत्वपूर्ण भूमिका रक्त प्रदर को रोकने में है.

100 प्रतिशत सफल

विश्व में आज करोड़ों युवतियां रक्तप्रदर के कारण अपना सौंदर्य एवं मानसिक शांति खो चुकी हैं. रक्तप्रदर के संपूर्ण उपचार करने के लिए विश्व में नारी संजीवनी 100 प्रतिशत सफल है.

6 माह

नारी संजीवनी के सभी परहेज के साथ में सेवन करने पर महिलाओं को रक्त प्रदर की बीमारी से पूरा आराम 6 माह के बाद ही मिलता है.

श्वेतप्रदर

नारी संजीवनी बहुत ही कम समय में श्वेतप्रदर में 100 प्रतिशत परिणाम दे रही है.

विश्व में वर्तमान में श्वेतप्रदर युवतियों के लिए गंभीर रोग है. श्वेतप्रदर के कारण युवतियों में बैचेनी बढ़ रही है. करोड़ों युवतियां श्वेतप्रदेर से ग्रसित हैं.

स्तन कैंसर

स्तन कैंसर पर नारी संजीवनी के प्रयोग करने पर चौकाने वाले परिणाम सामने आये हैं.

अमेरिका में वर्तमान में सबसे अधिक खर्च चिकित्सा के लिए किया जा रहा है. निरन्तर अनुसंधान स्तन कैंसर पर किये गये हैं.

1 लाख

उसके बाद भी अमेरिका में 1 लाख महिलायें हर साल स्तन कैंसर की मरीज बनती हैं. अमेरिका में 2025 में तीन में से 1 कैंसर का मरीज बन जायेगा.

30,000

ब्रिटेन में 30,000 महिलायें हर साल स्तन कैंसर की मरीज बनती हैं.

नीदरलेंड, डेनमार्क में महिलायें स्तन कैंसर से अधिक मर रही हैं. न्यूजीलेंड में स्तन कैंसर से मरने वालों की संख्या अधिक है. .

एडस

एड्स यानी एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिसीयेन्सी सिन्ड्रोम के प्रथम अक्षरों से मिलकर बना है यानी एच. आई. वी. पाजिटिव. एक्वायर्ड अर्थात ऐसी बीमारी जो पैतृक रुप से नहीं अपितु वि-ााणु संक्रमण से उत्पन्न हुई हो. इम्यून डिफीसिएंसी का तात्पर्य रोग प्रतिरोधक क्षमता का कम हो जाने से है.

सिंड्रोम

सिंड्रोम का तात्पर्य बीमारी को प्रकट करने वाले कई लक्षणों के समूह से है. एडस किसी एक रोग का नाम नहीं है अपितु एडस विभिन्न प्रकार के संक्रमणों का समूह है.

रामबाण

विश्व में विश्वविद्यालयों में एडस पर लंबे समय से गहन अनुसंधान किये गये हैं. गहन अनुसंधानों के बाद में यह स्प-ट है कि एडस को रोकने के लिए नारी संजीवनी ही रामबाण है.

करोड़ों महिलाओं में वर्तमान में एडस बहुत ही तेजी के साथ में विश्व में फैल रहा है.

गर्भाशय केंसर

गर्भाशय की शिथिलता को भी नारी संजीवनी पूरी तरह से दूर करती है. गर्भाशय एवं बीजाशय की दुर्बलता को दूर करती है इसलिये इन कैंसरों को भी रोकती है. नारी संजीवनी रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है.

पेटेंट

कैंसर में गोमूत्र अर्क पर भारत ने अमेरिका से 2002 में पेटेंट प्राप्त किया है.

विश्व में महिलाओं को गर्भाशय का कैंसर बहुत ही तेजी के साथ फैल रहा है. अमेरिका में इस रोग से 11000 महिलायें हर साल मर रही हैं.

आठवी महिला

भारत में कुल कैंसर का 30 से 40 प्रतिशत गर्भाशय के कैंसर हो रहे हैं. भारत में आठवी महिला गर्भाशय कैंसर की मरीज है.

5 लाख

5 लाख महिलायें हर साल गर्भाशय कैंसर की शिकार हो रही हैं. 2025 में तीन में से 1 को कैंसर होगा.

35 से 50 साल

35 से 50 साल की महिलाओं को गर्भाशय का कैंसर बहुत अधिक होता है.

गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर

आश्चर्य का वि-ाय

गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर नारी संजीवनी से अच्छा हो रहा है तथा नारी संजीवनी आश्चर्य के साथ में विश्व में सेवन की जा रही है.

कार्य प्रणाली

नारी संजीवनी महिला की थूक की लार को बढ़ाती है जिससे पाचन को पूरी तरह से ठीक करती है जिससे मल विसर्जन सुबह उठकर पूरी तरह से नियमित हो जाता है.

संतुलन

यकृत की कार्यक्षमता संतुलित करती है. महिलाओं के बांझपन को भी नारी संजीवनी दूर करती है.

लगभग 45 से 50 साल की आयु में मासिक धर्म बंद होते समय होने वाली विभिन्न बीमारियों में भी नारी संजीवनी बहुत अधिक लाभदायी है.

तीन में से एक

विश्व में गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर बहुत तेजी से फैल रहा है. 2025 में हर तीन में से 1 को कैंसर होगा. भारत में महिलाओं को स्तन कैंसर के बाद प्रजनन अंगों में पाया जाने वाला गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर बहुत अधिक है.

खून की कमी

प्रभावशाली

नारी संजीवनी खून की कमी में बहुत अधिक प्रभावशाली है.

88 प्रतिशत

विश्व में इंग्लैंड में 20 प्रतिशत गर्भवती महिलाएं फोलिक एसिड की कमी से ग्रस्त हैं. बांग्लादेश में 52 प्रतिशत, पाकिस्तान में 59 प्रतिशत, श्रीलंका में 62 प्रतिशत, नेपाल में 74 प्रतिशत, भारत में विश्व की सबसे अधिक 88 प्रतिशत गर्भवती महिलायें न्यूट्रिशिनल एनीमिया से ग्रस्त हैं.

रसौली का कैंसर

स्त्री शरीर में पाए जाने वाले कैंसरों में से सर्वाधिक प्रतिशत में पाया जाने वाला कैंसर है. यह गर्भाशय में पाया जाने वाला एक सुदम्य अबुर्द है जो अधिकांश रुप में मिलता है. यह कैंसर स्त्रियों में प्रजनन काल में मिलता है तथा यह 30 से 45 साल की आयु में सबसे अधिक मिलता है. यह रोग 20 साल से कम की आयु में सबसे कम मिलता है.

पांचवी महिला

30 से 40 साल की प्रत्येक पांचवी महिला में यह रसौली पायी जाती है. 2025 में तीन में से 1 को कैंसर होगा. रसौली एक या कई हो सकती है. रसौली छोटी या बड़ी भी हो सकती है.

नारी संजीवनी के प्रयोग से यह स्प-ट है कि यह रोग असाध्य नहीं है.

मासिक धर्म में अनियमितता

रोग प्रतिरोधक क्षमता

6 माह में नारी संजीवनी नारी में नये रक्त को तैयार करती है. मासिक धर्म के प्रारम्भ में चेहरे पर होने वाले फोड़े, फुंसियां एवं कील मुहांसों को पूरी तरह से दूर करती है.

विश्व में वर्तमान में मासिक धर्म में अनियमितता बहुत ही गंभीर समस्या है.

आनन्द

मासिक धर्म में जो अनियमितता है वह पूरी तरह से नियमित हो जाती है. नारी संजीवनी महिला के अंदर नया उत्साह, उमंग, आनन्द, जोश उत्पन्न करती है. नारी संजीवनी का सेवन स्वस्थ महिला भी कर सकती है.

उपचार

नारी संजीवनी पसीने एवं मूत्र के माध्यम से रक्त की गंदगी को बहुत ही तेजी के साथ बाहर निकालती है. रक्त के गाढ़ेपन को भी ठीक करती है.

अंतिम उपाय

विश्व में लगातार अनुसंधानों के बाद में यह स्प-ट है कि महिलाओं का अमृत नारी संजीवनी महिलाओं की सभी गंभीर बीमारियों के लिए अंतिम उपाय है.

अशोक चूर्ण

अशोक का चूर्ण गोमूत्र के साथ में महिलाओं के लिये रक्तप्रदर को रोकने के लिये उपयोगी है.

अशोक धृत

अशोक घृत का नियमित सेवन करने पर रक्तप्रदर में बहुत ही आराम मिलता है. अशोक घृत आर्यवैद्यशाला कोटटकल केरल के द्वारा तैयार किया जाता है.

लोध्र

लोध्र गोमूत्र के साथ में रक्तस्त्राव को रोकने के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

शतावरी

शतावरी चूर्ण रक्त प्रदर को पूरी तरह से नियंत्रित करता है.

नींबू का सत

नीबू का सत भी रक्त प्रदर को रोकने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

नारी संजीवनी बनाने के लिए आवश्यक मात्रा

नारीकेश्वर पानक या नारी संजीवनी जो गोमूत्र के साथ 1 ग्राम अशोक, 1 ग्राम शतावरी का चूर्ण, लोध्र 0.5 ग्राम, नीबू का सत 0.1 मिली ग्राम, 2.5 ग्राम शक्कर से तैयार की जाती है

100 प्रतिशत गोवंश रक्षा

100 प्रतिशत गोवंश रक्षा गोमूत्र के सर्वाधिक उपयोग के कारण आर्थिक आधार पर संभव है. महिलाओं के टानिक नारी संजीवनी बनाने के लिए मुख्य रसायन गोमूत्र की आवश्यकता है.

गोमूत्र का वैज्ञानिक विशले-ाण

विश्व में लंबे समय से गोमूत्र पर वेज्ञानिक अनुसंधान किये गये हैं.

वेचूर

केरल की वैचूर लुप्त होने की कगार पर है. वैचूर 24 घंटे में मात्र 1 किलो खाती है. वैचूर की रोग प्रतिरोधक क्षमता अदभुत है इसलिए वैचूर के मूत्र से नारी संजीवनी बनाने पर बहुत अच्छे परिणाम मिले हैं.

काली बछिया

देशी काली बछियाओं के मूत्र में विशे-ा उर्जा मौजूद है. वैज्ञानिकों के अनुसार बहुत अधिक प्रो विटामिन ए बीटा केरोटिन काली बछिया के मूत्र में होता है.

मीठी लार

काली बछिया का मूत्र पीने पर एक मिनट के बाद में मीठी लार छूटती है.

महिलाओं के रोगों में काली बछियाओं के मूत्र से तैयार नारी संजीवनी का परिणाम उल्लेखनीय है.

गाढ़ा बैंगनी

जड़ीबूटियां खाने वाली गायों का मूत्र गाढ़ा बैंगनी रंग क होता है.

ढाई गुना

गोमूत्र में खनिज की मात्रा दूध की तुलना में ढाई गुना है.

दूध में खनिज की मात्रा मात्र 0.75 प्रतिशत है जबकि गोमूत्र में खनिज की मात्रा 2.1 प्रतिशत है.

हमारे शरीर में पोटेशियम बहुत ही महत्वपूर्ण खनिज है. एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 250 ग्राम पोटेशियम मौजूद रहता है. जितना पोटेशियम हमें दैनिक आहार में मिलता है लगभग उतना पोटेशियम मलमूत्र के माध्यम से बाहर निकलता है.

आवश्यकता पड़ने पर गुर्दे पोटेशियम की थोड़ी मात्रा भी मूत्र के साथ उत्सर्जित कर देते हैं. पोटेशियम धन आयन के रुप में मौजूद रहता है. पोटेशियम कोशिकाओं में पाया जाता है. पोटेशियम प्रमुख अन्तःकोशिकीय धनायन है और सक्रिय कोशिकीय संरचना इसकी आंतरिक और बाहय कोशिकीय सांद्रता को स्थिर बनाये रखती है. शरीर में पोटेशियम का प्रमुख कार्य कोशिकाओं के आयतन तथा उनके रसाक-र्ण दाब को स्थिर बनाये रखता है. पोटेशियम शरीर अम्लीय-क्षारीय संतुलन को प्रभावित करता है. साथ ही अनेक उपापचयी प्रक्रियाओं में योग देता है. अंतः तथा बाहय कोशिकीय पोटेशियम आयनों का पारम्परिक अनुपात ही उत्तेजनीय उतकों के झिल्ली-विभव को निर्धारित करता है. कुछ बीमारियों में पोटेशियम के भंडार में कमी आ जाती है. अतिसार और वमन शरीर में सोडियम की कमी एवं जलाभाव के साथ पोटेशियम अभाव की स्थिति उत्पन्न होती है. अभिवृक्क प्रतिरक्षा पसीने के स्त्राव में हुई वृद्धि भी पोटेशियम अभाव पैदा कर सकती है क्योंकि ये हार्मोन गुर्दो के पोटेशियम स्त्राव दर में वृद्धि करते हैं. उतकों के न-ट होने के कारण भी शरीर को पोटेशियम के अभाव का सामना कर पड़ सकता है. पोटेशियम मांसपेशिओं को काम करने में सहायता करता है. पोटेशियम की कमी से आंतों की पेशियों में विकार उत्पन्न हो सकता है. जब किसी वजह से शरीर का कोई उतक न-ट हो जाता है तो उस उतक की कोशिकाओं का पोटेशियम मूत्र के साथ उत्सर्जित होने लगता है. एक ग्राम कोशिकीय प्रोटीन के न-ट होने पर लगभग 3 मिलीग्राम पोटेशियम मुक्त होता है. रक्त में मौजूद हाइड्रोजन आयनों की सांद्रता में कमी तथा गुर्दजन्य सोडियम आयनों की कमी भी पोटेशियम अभाव पैदा कर सकती है. ऐसा भी हो सकता है कि शरीर में मौजूद कुल पोटेशियम की मात्रा में कमी न आये पर शरीर में पोटेशियम अभाव के लक्षण स्प-ट होने लगे. यह सब उस समय होने लगता है जब बाहय कोशिकीय प्रभाग का पोटेशयम आंतरिक कोशिकीय प्रभाग में सीानातरिक होने लगता है. जब शरीर में पोटेशियम का अभाव होता है तो यह जरुरी नहीं है कि उसका प्रभाव रक्तप्लाज्मा के पोटेशियम स्तर पर भी पड़े. दरअसल रक्तप्लाज्मा तथा कोशिकीय पोटेशियम के बीच काफी जटल संतुलन रहता है जो अनेक कारणों से प्रभावित हो सकता है. इनमें से एक प्रमुख कारण है रक्त के अम्लीय-क्षारीय संतुलन में गड़बड़ी. अम्ल-रक्तता पोटेशियम को कोशिकाओं से बाहर निकालती है पर खार रक्तता बाहय कोशिकीय पोटेशियम को अन्तः कोशिकीय प्रभाग में भेजती है. अत्यधिक पोटेशियम अभाव हो जाने पर शरीर के अन्तः व बाहय कोशिकीय दोनों ही प्रभागों में पोटेशियम की सांद्रता कम हो जाती है. यद्यपि किसी भी प्रभाग में हुए पोटेशियम हास के कारण शरीर में पोटेशियम अभाव के लक्षण दिखाई देने लगते हैं किंतु दोनों ही प्रभाग में एक साथ होने वाली पोटेशियम अभाव की स्थिति से संबंधित लक्षण शीघ्रता से प्रकट होने लगते हैं. पोटेशियम अभाव से पीड़ित व्यक्ति संभ्रांति का शिकार हो जाता है. वह उदासीनता एवं घबराहट का शिकार होकर मूर्च्छा की स्थिति में भी पहुंच सकता है परन्तु उपचार के बाद स्वस्थ होने पर रोगी को यह सब कुछ याद नहीं रहता. पोटेशियम के अभाव से पेशियों में कमजोरी आ जाती है. कंकाल पेशियों पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है. आमाशय की पेशियों में आई कमजोरी के कारण छोटी आंत में अवरोध की स्थिति पैदा हो सकती है. ह्रदय पेशी में उत्पन्न दुर्बलता, ह्रदय को विस्तारित करती है और फलस्वरुप रक्तचाप गिरने लगता

है. ऐसी स्थिति के लंबे समय तक बने रहने पर ह्रदय अपना काम करना बंद भी कर सकता है. श्वसन पेशियों में आई कमजोरी के कारण श्वसन केंद्र नि-क्रीय हो सकता है और फलस्वरुप व्यक्ति मौत का शिकार बन सकता है. पोटेशियम अभाव की स्थिति में गुर्दे मूत्र में पोटेशियम की सांद्रता बढ़ाने या घटाने में अक्षम हो जाते हैं. मूत्रतारोधी के हार्मोन भी गुर्दो की क्रियाशीलता को प्रभावित नहीं करते हैं. पोटेशियम अभाव से पीड़ित व्यक्ति को बार बार मूत्र त्यागना पड़ता है. अत्यधिक मूत्र निकलने के कारण शरीर में जलाभाव की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है और पीड़ित व्यक्ति को बार बार प्यास लगने लगती है. पोटेशियम अभाव से ग्रस्त व्यक्ति के शरीर में हाइड्रोजन आयन के अभाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है. पोटेशियम आधिक्य की स्थिति जिसमें पोटेशियम आयनों की अधिकता होती है शरीर के लिये घातक है. जब शरीर अपनी आवश्यकता से अधिक पोटेशियम को बाहर निकाल नहीं पाता है तब शरीर में पोटेशियम की मात्रा बढ़ने लगती है. पोटेशियम आधिक्य गुर्दे के विकार उत्पन्न हो जाने के कारण तथा रक्त में पोटेशियम की मात्रा एकाएक अधिक मात्रा पहुंचने के कारण होता है. कभी कभी कोशिकीय पोटेशियम के अचानक मुक्त होने के कारण पोटेशियम आधिक्य की स्थिति उत्पन्न होती है. पोटेशियम आधिक्य से ह्रदयपेशी पर अवर्तमन प्रभाव पड़ता है. फलस्वरुप ह्रदय धड़कने की दर कम और असामान्य हो जाती है. सीरम में पोटेशियम की सांद्रता प्रतिलीटर में सात मिलीलीटर अधिक हो जाती है तो ह्रदय गत्यावरोध हो जाता है. रक्त में पोटेशियम की सांद्रता को ज्वाला ज्योतिर्मापी की सहायता से आसानी से मापी जाती है. मनु-य के रक्त में सामान्यतः 3.5 से 5.5 मिली मोल पोटेशियम प्रतिलीटर होता है. पोटेशियम के आधिक्य अथवा अभाव की जानकारी इ.सी.जी. में हुए परिवर्तन से भी प्राप्त की जा सकी है. मुंह से कुछ ऐसे पदार्थ दिये जाते हैं जो आमाशय तथा छोटी आंत में पहुंचकर पोटेशियम का अधिशो-ाण कर सकें. ग्लूकोज तथा इंसुलिन भी पोटेशियम आधिक्य को कम करने में सक्षम हैं. ये पोटेशियम को बाहय कोशिकीय प्रभग से अतःकोशिकीय प्रभाग में जाने के लिये प्रेरित करते हैं. पोटेशियम की कमी के कारण अपच, मंदाग्नि, कब्ज, वायु विकार उत्पन्न होते हैं. पोटेशियम शरीर के प्राकृतिक विकास के लिये बहुत ही अधिक आवश्यक है क्योंकि पोटेशियम के कारण पाचन बहुत ही सही ढंग से होता है और भूख बहुत ही तेज लगती है. गर्भ में पल रहे बच्चे को संपूर्ण विकास के लिये पोटेशियम की आवश्यकता 5 माह के बाद पड़ती है इसलिये गर्भवती महिला को गाय माता के दूध एवं छाछ का सेवन प्रतिदिन अवश्य करना चाहिये. एक व्यक्ति को 140 मिलीग्राम पोटेशियम की आवश्यकता होती है.

सोडियम

सोडियम मानव शरीर के लिये अनिवार्य है. सोडियम मानव जीवन के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. सोडियम के कारण रक्त पूरी तरह से साफ रहता है. सोडियम के कारण शरीर में नाडी विकार नहीं होता है.

सोडियम भोजन को पचाने में सहायक होता है. शरीर में अन्य खनिजों को शरीरोपयोगी बनाने तथा उनका सात्म्य करने के लिये सोंडियम बहुत महत्वपूर्ण है. सोडियम के कारण पसीने में खनिज पाया जाता है.

मूत्र में पाये जाने वाले 17 प्रकार के खनिजों के अलावा रुबीडियम, टिटेनियम, लिथियम, स्ट्रांशियम, वेनेडियम, बोरोन आदि अतिरिक्त हैं. कुछ खनिज क्षारीय होते है और कुछ खनिज अम्लीय होते हैं. खनिज से शरीर में अम्ल तथा क्षार का संतुलन बना रहता है. खनिज ह्रदय को भी कार्यक्षम बनाने में बहुत अधिक सहायक होते हैं.

खनिज के कारण रक्त में प्रगाढ़ता आती है. खनिज के कारण रक्तचाप होने की संभावना कम होती है. खनिज मानव के लिये आवश्यक सभी खनिजों की पूर्ति सिर्फ गाय माता के मूत्र से करना संभव है.

सामान्य अमिनो अम्ल को ताकतवर न्यूरो मेसेंजर में बदलने के लिए खनिज की आवश्यकता होती है.

गोमूत्र में प्रोटीन 0.1037 ग्राम प्रति लीटर, यूरिक अम्ल 135 मिलीग्राम प्रति लीटर, यूरिया 5.5418 मिलीमोल प्रतिलीटर, क्रियाटिनिन 0.6670 ग्राम प्रति लीटर, लेक्टेट 3.7830 मिलीमोल प्रति लीटर, विटामिन सी 216. 408 मिलीग्राम प्रति लीटर, विटामिन बी-1 444125

माइक्रोग्राम प्रति लीटर, विटामिन बी-2 0.6336 मिलीग्राम प्रतिलीटर, कैल्शियम 5.735 मिलीमोल प्रति लीटर, फास्फोरस 0.4805 मिलीमोल प्रति लीटर, पाचक रसों में लेक्टेट डिहाइड्रोजेनेज 21.780 यूनिट प्रति लीटर, अल्कलाइन फास्फेटेज 110.110 के.ए. यूनिट, अम्लीय फास्फेटेज 456.620 के.ए. यूनिट, फिनोल 4.75 मिलीग्राम प्रति 100 मिलीलीटर है.

कैरोटिन

गायों को प्रतिदिन ताजा एवं कोमल हरा चारा भरपेट खिलाने पर कैरोटिन मूत्र में मिल जाता है.

श्यामा गाय में सूर्य के प्रकाश के साथ अन्य तरंगों को सोखने का अदभुत गुण मौजूद है जिसके कारण श्यामा गाय का मूत्र विशेष गुणकारी है.

कपिला गाय में विशेष उर्जा मौजूद है. कपिला गाय का मूत्र ज्यादा गुणकारी माना गया है. गाय माता के मूत्र में मौजूद *कैरोटिन* यानी स्वर्णक्षार बहुत ही चमत्कारिक कार्य करता है.

गाय माता के मूत्र में मौजूद कैरोटिन की मात्रा गाय माता के अधिक से अधिक सूर्योदय से सूर्यास्त तक सूर्य के प्रकाश में रहने और खानपान पर पूरी तरह से निर्भर करती है.

कैरोटिन शरीर में प्रवेश कर विटामिन ए में परिवर्तित हो जाता है. कैरोटिन के कारण ही रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत अधिक बढ जाती है.

गाय के दूध, मक्खन, घी के अंदर बहुत अधिक प्रो विटामिन ए बीटा कैरोटिन कैंसर जैसे खतरनाक रोगों से भी शरीर के लडने की क्षमता तैयार रहती है.

गोमूत्र का मूल्य

नारी संजीवनी, बच्चों का टानिक बाल पाल रस, युवाओं का अमृत प्रमेहारी, अर्क, आसव बड़ी मात्रा में बनाने पर गोमूत्र की मांग बढ़ने के कारण गोमूत्र का मूल्य गोपालकों को बहुत अच्छा मिलेगा.

स्वरोजगार

नारी संजीवनी युवतियों तथा युवाओं के द्वारा गांव गांव में गहन अनुसंधान कर बहुत ही सावधानी के साथ में आवश्यकता अनुसार बनाने पर 40 करोड़ से अधिक कार्यकर्ताओं को स्वरोजगार मिलेगा.

प्रथम स्तर

100 रु.

वर्तमान में नारी संजीवनी का मूल्य बहुत ही अच्छा मिल रहा है. नारी संजीवनी महिलाओं के रोगों में कारगर साबित होने के कारण ही उच्च गुणवत्ता वाली नारी संजीवनी 180 मिली लीटर की शीशी का अधिकतम मूल्य 100 रु. तक है.

और अच्छा

आने वाले समय में युवाओं को नारी संजीवनी का मूल्य और अच्छा मिलेगा.

100 लीटर

प्रथम स्तर पर युवतियां चाहें तो अपनी आवश्यकता के लिए बहुत ही कम मूल्य पर नारी संजीवनी अपने निवास पर आसानी के साथ में तैयार कर सकती हैं.

अनुसंधान केंद्र

सभी आधुनिकतम सुविधाओं युक्त अनुसंधान केंद्र लगाकर बहुत ही सावधानी के साथ में प्रत्येक वस्तु पूरी तरह से जैविक ही उपयोग कर उच्च गुणवत्ता के साथ में नारी संजीवनी तैयार करना संभव है.

प्रथम स्तर पर व्यक्तिगत रुप से शिक्षित एवं उर्जावान कार्यकर्ता को बहुत ही कम लागत लगाकर कम से कम प्रतिमाह 100 लीटर एवं अधिकतम 1000 लीटर तक नारी संजीवनी तैयार करने पर बहुत अच्छी आय प्राप्त होगी.

वितरण

बिना विज्ञापन के प्रचार प्रसार करने के लिए आसपास में पैदल, कम दूरी पर साइकिल, साइकिल रिक्शा, अधिक दूरी में मोपेड, दो पहिया वाहन या ओटो से नमूने के रुप में युवतिओं को कम मूल्य पर वितरण करने के लिए प्रत्येक घर तक पहुंचने में सरलता रहेगी. संतो-ा मिलने पर लगातार ओर्डर मिलते रहेंगे.

निर्यात

विश्व में नारी संजीवनी के निर्यात करने के लिए महानगरों में इंटरनेट पर निर्यातकों से संपर्क कर प्रयत्न आवश्यक हैं.

काउ थैरेपी केंद्र

काउ थैरेपी केंद्र विश्व में स्थापित कर नारी संजीवनी की मांग बढ़ा सकते हैं.

उच्च गुणवत्ता वाली नारी संजीवनी निर्यात करने पर अपार धन की संभावना है.

द्वितीय स्तर
प्रचार प्रसार

द्वितीय स्तर पर बिना विज्ञापन के बहुत ही छोटी गोशालाओं में महिलाओं रोग की विशे-ाज्ञों को बिठा कर तथा आवश्यकता पड़ने पर रोग के निरीक्षण करने के लिए मरीज को भरती करने की सुविधा के साथ में आक-र्क पत्रक प्रकाशित कर वितरित कर प्रचार प्रसार करना संभव है.

नमूने

साइकिल रिक्शाओं या ओटो रिक्शाओं के माध्यम से प्रारम्भ में नमूने के रुप में कम मूल्य पर वितरण करने पर हर घर में नारी संजीवनी के चमत्कार से महिला रोग से पीड़ित युवति परिचित होगी.

रोग में लाभ मिलने पर नियमित सेवन करने के लिए एक साथ में नारी संजीवनी लेगी.

इंटरनेट

इंटरनेट पर वेबसाइट, फेसबुक, ब्लोग पर नारी संजीवनी के बारे में जानकारी देकर भी विश्व में निर्यात करने के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है.

संपूर्ण स्वावलंबन

1000 लीटर

महिला रोग विशे-ाज्ञ के मार्गदर्शन में सभी सुविधाओं के साथ में आधुनिक अनुसंधान केंद्र प्रारम्भ कर गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए आयुर्वेद आचार्य के मार्गदर्शन में नारी संजीवनी कम से कम प्रतिमाह 1000 लीटर तथा अधिकतम 10,000 लीटर तक बनाने पर अधिक से अधिक स्वरोजगार उत्पन्न होगा.

तृतीय स्तर
वितरण

वर्तमान में विश्व के कई देशों में गायत्री परिवार के परिजन नारी संजीवनी जैसी अमृत औ-धि के लिए बहुत ही अधिक सक्रिय हैं.

स्वामी रामदेव जी के द्वारा पूरे विश्व में स्वदेशी की लहर चलाकर नारी संजीवनी महिला टानिक युवतियों के लिए कितना लाभदायी है इसके लिए मानसिक स्तर पर तैयार किया गया है.

बड़े वाहनों में भारत के निःशुल्क योग केंद्रों, सभी गायत्री शक्तिपीठों, प्रज्ञापीठों, ज्ञानमंदिरों में अखिल विश्व गायत्री परिवार के परिजनों के माध्यम से वितरण करने पर हर गांव में नारी संजीवनी का वितरण संभव है. गोवंश के स्वावलंबन के साथ में स्वरोजगार उत्पन्न होगा.

निर्यात

10,000 लीटर

तृतीय स्तर पर मध्यम गोशालाओं में निर्यात करने के लिए बहुत ही उच्च गुणवत्ता के साथ में नारी संजीवनी प्रतिमाह कम से कम 10,000 लीटर तथा अधिकतम 50,000 लीटर तैयार करने पर स्वरोजगार उत्पन्न होगा.

सावधानी

विकसित देशों में नारी संजीवनी का मूल्य बहुत अच्छा मिल रह है. निर्यात करने के लिए नारी संजीवनी के निर्माण करने के लिए सावधानी की आवश्यकता है.

जैविक चारा

प्रतिदिन जैविक चारा खिलाना तथा पवित्र जल पिलाना अनिवार्य है. मूत्र भी पूरी तरह से सत्विक मिलेगा.

स्वस्थ

गाय या बछिया का पालन बहुत ही सतर्कता के साथ में किया जाये जिससे गाय या बछिया पूरी तरह से स्वस्थ हो.

चतुर्थ स्तर

वर्तमान में भारत में विश्व के सबसे अधिक गोवंश मौजूद हैं. सबसे अधिक जड़ीबूटियां भारत में मौजूद हैं. जड़ीबूटियों से युक्त गोमूत्र भी सबसे अधिक भारत में ही नारी संजीवनी के लिए उपलब्ध है.

चतुर्थ स्तर पर गोवंश के संपूर्ण स्वावलंबन के साथ में स्वरोजगार के अच्छे अवसर तैयार होंगे. आर्थिक आधार पर गोवंश की रक्षा करनी संभव हो सकेगी.

50,000 लीटर

चतुर्थ स्तर पर बड़ी गोशालाओं में सभी सुविधाओं के साथ में आधुनिक अनुसंधान केंद्र स्थापित कर तथा आवश्यकता पड़ने पर असाध्य रोगों के गहन परीक्षण तथा उपचार करने भरती करने के लिए गुजरात के वागलदरा की तरह विशाल अस्पताल तैयार करना आवश्यक है.

प्रतिमाह कम से कम 50,000 लीटर तथा अधिकतम 1 लाख लीटर नारी संजीवनी उच्च गुणवत्ता के साथ में तैयार करने पर स्वरोजगार उत्पन्न होगा.

पंचम स्तर

निर्यातक

विश्व में बहुत अच्छे मूल्य पर नारी संजीवनी देने के लिए सावधानी के साथ में बहुत ही उच्च गुणवत्ता के साथ में निर्माण करना है.

हवाई अडडों

उद्योगपतियों को नारी संजीवनी के निर्यात करने के लिए सभी अंतरा-ट्रीय हवाई अडडों पर रखवाकर प्रयत्न करने की आवश्यकता है.

1 लाख लीटर

पंचम स्तर पर महानगरों में निर्यातकों को देने के लिए कम से कम प्रतिमाह 1 लाख लीटर नारी संजीवनी तैयार करने पर गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबन के साथ में बहुत अधिक स्वरोजगार उत्पन्न होगा.

अधिक जानकारी के लिए श्रीमती कमला आशर, अखिल विश्व कामधेनु परिवार, 21 सी, जयराज कोम्प्लेक्स, सोनी नी चाल, ओढव मार्ग, अहमदाबाद 382415 मोबाइल 9662407242 में सपर्क करें.